Reg. No. : N-1316/2014-15

ISSN 2394-2207
November, 2022 - April 2023
Vol. IX, No. I
IIJ Impact Factor : 5.01

उन्मेष

Unmesh

An International Half Yearly
Peer Reviwed Refereed Research Journal
(Arts & Humanities)

प्रधान सम्पादक
डॉ० राधेश्याम मौर्य

सम्पादक
डॉ० शिवेन्द्र कुमार मौर्य

प्रकाशक : जन सेवा एवं शोध शिक्षा संस्थान, प्रतापगढ़, उ०प्र०

उन्मेष Unmesh - ISSN 2394-2207

IIJ Impact Factor : 5.011IJ
Impact Factor : 4.101
Vol. : IX, No. I
November 2022-April 2023

- सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्य–संसार — 52–55
  डॉ. चंद्रकांत सिंह
- भारतीय लोकतंत्र में महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता (उत्तराखण्ड राज्य के विशेष संदर्भ में) — 56–59
  डॉ0 दिनेश कुमार
- 'अकाल में सारस' और केदारनाथ सिंह पलायनवादी जीवन की आंतरिक पीड़ा से जूझता कवि — 60–62
  प्रिया
- मानव मूल्यों और सांस्कृतिक विरासत के कवि तुलसीदास — 63–65
  पल्लवी रॉय
- कबीरदास का प्रेमलोक — 66–68
  डॉ0 गीता प्रजापति
- भारतीय साहित्य में पर्यावरण — 69–71
  डॉ0 महाराज सिंह धाकड़
- संविधान निर्माता डॉ0 अंबेडकर का सामाजिक न्याय — 72–75
  श्री प्रकाश
- स्त्री मुक्ति एवं नारी विमर्श — 76–78
  प्रमांशु यादव
- साइबर बुलिंग के कारण बच्चों में उत्पन्न होने वाले तनाव व इसका समाधान — 79–84
  अन्नपूर्णा देवी
- बड़हरा प्रखण्ड में कृषि विकास के आयाम : एक भौगोलिक अध्ययन — 85–87
  भीम कुमार व प्रो० (डॉ०) नवीन कुमार
- रामधारी सिंह 'दिनकर' कृत कालजयी गीतिनाट्य 'उर्वशी' — 88–90
  डॉ0 पूजा
- रीतिकाव्य में काव्यात्मक यथार्थ और ऐन्द्रिक प्रेम — 91–95
  डॉ0 दीपक त्रिपाठी
- कविता में प्रतिरोध का महत्व — 96–99
  कुणाल भारती
- जनजातियों के मनोवैज्ञानिक सोच एवं विचार — 100–102
  डॉ0 जे0बी0 परमार
- पर्यावरण और जल प्रदूषण — 103–105
  डॉ0 अमित राणा
- बड़हरा प्रखण्ड का नगरीय विकास : एक भौगोलिक अध्ययन — 106–108
  शैलेश कुमार सिंह व प्रो० (डॉ०) नवीन कुमार
- आचार्य भट्टोजिदीक्षितकालीन सामाजिक जीवन — 109–110
  भावना सिंह

उन्मेष Unmesh - ISSN 2394-2207

Impact Factor : 5.01
Vol. : IX, No. I, November 2022-April 2023
Pg. No. 52-55

सुभद्रा कुमारी चौहान का काव्य–संसार

डॉ0 चंद्रकांत सिंह*

*सहायक प्रोफेसर (हिंदी विभाग), हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धौलाधार परिसर–एक, धर्मशाला, जिला– कांगड़ा, हि. प्र.– 176215

सारांश : सुभद्रा कुमारी चौहान राष्ट्रीय चेतना से युक्त महत्वपूर्ण कवयित्री हैं। उनकी कविताओं का क्षेत्र अत्यंत विस्तीर्ण है। उन्होंने घर–परिवार से लेकर सामाजिक भूमिकाओं का जो सफल निर्वहन किया है वह प्रशंसनीय है। उनकी कविताओं में सामाजिक चेतना से लेकर भगवदभक्ति तक की लम्बी रेखा दिखाई पड़ती है। उनकी कविताओं को पढ़ते हुए ऐसा लगता है जैसे उन्होंने मानव जीवन की पूर्णता को प्राप्त करने का भरसक प्रयास किया हो। यही नहीं अपने मनुष्य होने को उन्होंने पूरी तरह चरितार्थ भी किया है। उनकी कविताओं में हर तरह के विभेद से ऊपर उठकर अपनी जिम्मेदारियों का पालन करने की चिंता है जो उन्हें अपने समय का महत्वपूर्ण कवि तो बनाती ही है साथ ही सामाजिक–राजनीतिक प्रतिबद्धता उन्हें अपने समकालीनों से विलग करती है मानव जीवन का सदुपयोग करते हुए भगवत्ता को कैसे प्राप्त किया जा सकता है ? यह बखूबी उनके जीवन से सीखा जा सकता है। यही कारण है कि उनकी कविताओं को मनुष्य से देवत्व अर्जित करने वाली भाव अनुभूतियाँ कहें तो अतिशयोक्ति न होगी।

बीजशब्द– राष्ट्र–प्रेम, अस्पृश्यता, ममत्व, मार्शल लॉ, एकान्तिक समर्पण, सामाजिक नेतृत्व।

सुभद्रा कुमारी चौहान स्वतंत्रता पूर्व कवियों में अपनी विशेष पहचान बनाने वाली महत्वपूर्ण कवयित्री हैं जिनकी कविताओं में घर–परिवार, कार्यक्षेत्र से होते हुए सामाजिक नेतृत्व का विशेष गुण परिलक्षित होता है। उनकी कवितायें इस मायने में विशेष हैं कि कविताओं में कवित्व शक्ति, साहित्यिक विशदता के साथ सामाजिक–राजनीतिक भूमिका का महत्वपूर्ण रूप झलकता है। कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान इस भूमिका को भली–भाँति समझती हैं, यही कारण है कि उनकी कविताओं में कवित्वशक्ति पर भरोसे के साथ राष्ट्र के लिए सब कुछ न्यौछावर करने का बोध है। 'मेरी प्याली' कविता में कवयित्री का अपनी रचनात्मक शक्ति पर पूर्ण भरोसा है। जन–जीवन में जागृति एवं उन्मेष के लिए उनकी कविताओं को देखा जा सकता है। वह स्पष्ट लिखती हैं–

अपने कविता–कानन की
मैं हूँ कोयल मतवाली।
मुझसे मुखरित हो गाती
उपवन की डाली–डाली।
+ + + + + + + + + +
मैं जिधर निकल जाती हूँ
मधुमास उतर आता है।
नीरस जन के जीवन में
रस घोल–घोल जाता है।
+ + + + + + + + +
सूखे सुमनों के दल पर
मैं मधु–संचालन करती
मैं प्राण हीन का अपने
प्राणों से पालन करती।[1]

सुभद्रा कुमारी चौहान केवल कवयित्री भर नहीं हैं बल्कि देश और समाज में जागृति लाने वाली नेत्री भी हैं। कांग्रेस के अधिवेशनों में उनकी प्रतिभागिता को विस्मृत नहीं किया जा सकता। वह अपने पति लक्ष्मण सिंह के साथ न केवल अधिवेशनों में प्रतिभागिता करती हैं बल्कि स्वय भी देश के उत्थान के लिए प्रयासरत रहती हैं। इस तरह उनकी कविताओं का जगत बड़ा व्यापक है। उनकी कविताओं में व्यक्तिगत प्रेम से लेकर राष्ट्रप्रेम की अद्भुत छँटा दिखाई पड़ती है। जीवन के विविध प्रसंगों पर वह पूरे अधिकार के साथ लिखती हैं, यह उनके साहित्य की अपूर्व विशेषता है। उनकी कविताओं में निजत्व के साथ प्रभुता से जुड़ने की बेचैनी है। चन्द्रा सदायत सुभद्रा जी के सन्दर्भ में लिखते हुए कहती हैं कि– "किसी भी रचनाकार का मूल्यांकन करते समय सबसे महत्वपूर्ण घटक होता है वह युग परिवेश, जिसमें वह साहित्य रचा गया हो। सुभद्रा जी जिस युग में लिख रही थीं वह राजनीतिक–सामाजिक दृष्टि से आजादी के आंदोलन का युग था और हिंदी कविता की दृष्टि से छायावादी युग। उसी छायावादी दौर में उन्होंने ऐसी कविताएँ लिखीं जिनमें न रहस्यात्मकता है, न अलंकारिकता, न शिल्प का चमत्कार, न प्रतीकात्मकता और न ही अनेकार्थकता तथा गूढ़ व्यंजना। सुभद्रा जी जिस राजनीतिक–सामाजिक जीवन से प्रत्यक्षतः जुड़ी हुई थीं, उसी को उन्होंने अपने काव्य का विषय बनाया।[2] कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि सुभद्रा जी की कविताओं में छायावाद की तरह रहस्यात्मकता या उक्ति–वैचित्र्य नहीं है। हाँ, इतना अवश्य है कि कवयित्री ने पूरे जतन के साथ अपने युग बोध को जिया है इसलिए उनकी कविताओं में भारत की चिंता सर्वप्रथम उभरती है। सुभद्रा जी परिवार पर भी लिखती हैं, घर–गृहस्थी पर भी कलम चलाती हैं किन्तु ऐसा बिल्कुल नहीं कि उनकी कवितायें वायवीय हों, उनकी कविताओं में राग है और यह घर से प्रारम्भ होकर राष्ट्र की सीमा को तय करता है।